ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(10): 696-697
www.allresearchjournal.com
Received: 01-08-2020
Accepted: 06-09-2020

आरजू खान
शोधार्थी, हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
आरजू खान
शोधार्थी, हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में स्त्री विमर्श

आरजू खान

प्रस्तावना

नारी-विमर्श (फेमिनिज्म/फेमिनिस्ट डिस्कोर्स) का प्रारंभ कब हुआ, इसके संबंध में विद्वानों में सुनिश्चित एकमतता नहीं है। कुछ लोगों के अनुसार इसका प्रारंभ उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ, जब पश्चिम में स्त्रियों के मताधिकार और पाश्चात्य संस्कृति में स्त्रियों के योगदान पर चर्चा होने लगी थी।

लेकिन वास्तविकता यह है कि स्त्री-विमर्श बीसवीं शताब्दी की देन है। बीसवीं शताब्दी में भी कुछ लोग इसका प्रारंभ फ्रांसीसी लेखक सिमोन द बुआ की पुस्तक 'द सेकंड सेक्स'(1949)' के प्रकाशन-वर्ष से मानते हैं और कुछ मैरी एलमन की पुस्तक 'थिकिंग एबाउट वीमन' (1968) के प्रकाशन - वर्ष से। लेकिन अधिकांश विद्वान इस तरह के किसी वर्ष-विशेष को स्त्री-विमर्श का प्रस्थान बिंदु मानना उचित नहीं समझते, क्योंकि बीसवीं शताब्दी में ही इससे पहले भी स्त्री की अलग पहचान, उसके स्वतंत्र अस्तित्व और उसके अधिकारों की समस्याओं को उठाया जाने लगा हिंदी में नारी-विमर्श ने बीसवीं शताब्दी के लगभग अंत में ज़ोर पकड़ा है और अनेक लेखिकाएं उसमें शामिल हुई हैं। हिंदी की अनेक लेखिकाएं नारीवादी होने का दावा कर रही हैं और नारीवादी साहित्य के सृजन में संलग्न हैं। प्रसिद्ध स्त्रीवादी चिंतक कवि गोलेन्द्र पटेल ने नारीवाद के संदर्भ में कहा है कि "स्त्री-दृष्टि में स्त्री-विमर्श वह मानवीय चिंतन धारा है जो स्त्री-चेतना को जागृत कर , उसकी स्वतंत्रता की वकालत करती है , इसे ही स्त्री की भाषा में नारीवाद कहते हैं।"[३]

वैश्विक स्तर पर नारीवादी आंदोलन

आंदोलन के रूप में इसकी शुरुआत ब्रिटेन और अमेरिका में हुई। 18वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के दौरान कई किस्म के संघर्ष हुए। उनमें एक संघर्ष स्त्री-पक्ष ने भी किया। उन्होंने धर्मशास्त्र और कानूनों के द्वारा खुद को पुरुषों के मुकाबले शारीरिक और बौद्धिक धरातल पर कमजोर मानने से इनकार कर दिया।

1848 ई. में कुछ प्रखर महिलाओं ने बाकायदा एक सम्मेलन करके नारी मुक्ति से संबंधित एक वैचारिक घोषणा पत्र जारी किया। इन महिलाओं में ऐलिजाबेथ कैन्डी, स्टैण्टन, लुक्रसिया काफिनमोर प्रमुख हैं। इस सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि स्त्री को सम्पूर्ण और बराबर के कानूनी हक दिए जाए। उन्हें पढ़ने के मौके, बराबर मजदूरी और वोट देने का अधिकार इत्यादि क्रान्तिकारी माँगे पारित की गयी। यह आंदोलन तेजी से सारे यूरोप में फैल गया, लेकिन असली सफलता 1920 में जाकर मिली। जब अमेरिका में स्त्रियों को वोट डालने का अधिकार मिला।

इस प्रकार विश्व के अनेक देशों में इस आंदोलन की शुरुआत हो चुकी थी, लेकिन 1951 में संयुक्त राष्ट्र की महासभा ने जब भारी बहुमत से महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों का नियम पारित किया, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नारी मुक्ति के आन्दोलन का प्रारम्भ तभी से माना जाता है।

भारतीय नारीवादी आंदोलन

पं. रमाबाई ने 1882 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'स्त्री धर्म नीति' के माध्यम से स्त्रियों को जागृत कर उन्हें स्वावलम्बन और स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाया। उन्होंने स्त्री शिक्षा को लेकर कड़ा परिश्रम किया। वे स्त्रियों के लिए समान अवसर व समान वेतन प्रदान करने के पक्ष में लगातार लड़ती रहीं। सन् 1883 में उन्होंने पितृसत्ता के विरोध में 'द हाइ कास्ट हिन्दु विमेन' पुस्तक लिखी। विधवाओं और परित्यक्ताओं के लिए उन्होंने 'शारदा सदन' की स्थापना की। वे स्त्री-पुरुष के परस्पर सहयोग व समानता के भाव पर बल देती हुई कहती है कि- "यह विस्तृत सांसारिक जिन्दगी किसी महाकाव्य की तरह है, जिसके दो पहलू हैं, वाम और दक्षिण। वाम पहलू नारी और दक्षिण पहलू पुरूष। जब दोनों पहलू संतुलन में कार्य करते हैं तभी प्रसन्नता और सुख का अनुभव हो सकता है।"

ज्योतिराव फुले व उनकी पत्नी सावित्री बाई फुले ने स्त्रियों के सुधार के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए। सावित्री बाई फुले ने भी स्त्रियों के सुधार के लिए 'महिला सेवा मंडल' की स्थापना की। फुले दम्पत्ति ने सन् 1848 से लेकर सन् 1952 तक लगभग अठारह पाठशालाएं खोलीं। उन पाठशालाओं का संचालन और प्रबंध सावित्री बाई ही किया करती थीं। उन्होंने स्वयं ही पाठशालाओं का पाठ्यक्रम बनाया और उसे कार्यान्वित भी किया। प्रारंभ में लड़कियों की शिक्षा का विरोध तो हुआ किंतु बाद में लोग स्त्री-शिक्षा के महत्व को समझने लगे और कन्याशालाएँ अधिक संख्या में खुलती चली गई।

ताराबाई शिंदे ने सन् 1882 में अपनी रचना 'स्त्री-पुरुष तुलना' के माध्यम से तत्कालीन समाज में स्त्री की वास्तविक स्थिति का चित्रण किया। लिंग के आधार पर स्त्री-पुरुष के अधिकारों को लेकर जो भेदभाव हो रहा था उसका उन्होंने कड़ा विरोध किया। विधवाओं पर किये जाने वाले अत्याचारों का उन्होंने डटकर मुकाबला किया तथा उनके पुनर्विवाह के लिए आवाज उठाई। ताराबाई शिंदे स्वयं विधवा थीं इसलिए विधवाओं की पीड़ा से, उन पर हो रहे अत्याचारों से अधिक परिचित थी। ऐसे धर्म और धार्मिक कट्टरताओं पर कड़ा प्रहार करती थी जो एक विधवा को ऐसा नरकीय के जीवन जीने पर विवश करते हैं।

इन स्त्रियों ने न केवल नारी आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपितु पुरुष वर्चस्व की लक्ष्मणरेखा लांघकर काफी तादाद में देश की आजादी की लड़ाई में भाग लिया 20वीं सदी तक आते-आते एनीबेसेंट, सरला देवी, सरोजिनी नायडू, और इंदिरा गांधी जैसी महिलाएं राजनीति में सक्रिय हुईं तथा वहां अपने दखल से उन्होंने अपनी अमिट छाप छोड़ी।

स्त्री विमर्श: अन्य गद्य विधाएँ

१.प्रभा खेतान

हिंदी प्रसिद्ध लेखिका प्रभा खेतान का साहित्य स्त्री जीवन के संघष, उसकी इच्छा, मनोकामना, पीड़ा, छटपटाकर एवं स्त्री मानसिकता का जीवंत दस्तावेज है। पुरुष प्रधान संस्कृति रूढ़ि-परम्परा को तोड़कर स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाली आधुनिक नारी का अंकन उन्होंने बड़े ही सशक्त ढंग से किया है।

प्रभा खेतान स्वतन्त्र, धनाढ्य महिला-व्यवसायी है और लेखिका हैं वह एक विवाहित पुरुष की 'रखैल' की भूमिका स्वेच्छा से सवीकार करती हैं। उनका सारा द्वन्द्व इस तथ्य को लेकर है जिसे वे एक अनुपस्थिति प्रतिबिम्ब कहती है। वे स्वयं से सवाल करती हैं- "मैं क्या लगती थी डॉक्टर साहब की?....इस रिश्ते को ना नहीं दे पाऊंगी। भला प्रेमिका की भूमिका भी कोई भूमिका हुई.... रखैल का क्या अर्थ, हुआ? वही जिसे रखा जाता है, जिसका भरण-पोषण पुरुष करता हो। लेकिन डॉक्टर साहब वह मेरा भरण-पोषण नहीं करते।" उनकी यह आत्मकथा देहमुक्ति की कथा है। अपना विकल्प स्वयं चुनने पर भी घुटन और टूटन वहां भी है।

संदर्भ

1. डॉ. नगेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स,१९७३, पृ
2. डॉ. हेमंत कुकरेती- हिंदी साहित्य का इतिहास, सतीश बुक डिपो,२०१६,
3. डॉ. मंदाकिनी मीणा एवं डॉ. अनिरुद्ध कुमार 'सुधांशु'- अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य, श्री नटराज प्रकाशन, २०१६,
4. डॉ. मंदाकिनी मीणा एवं डॉ. अनिरुद्ध कुमार 'सुधांशु'- अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य, श्री नटराज प्रकाशन, २०१६,